# प्रथम आयुष विश्वविद्यालय

## चर्चा में क्यों?

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उत्तर प्रदेश के पहले आयुष विश्वविद्यालय **'महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय'** का गोरखपुर में उद्घाटन किया।

- उन्होंने इस क्षेत्र की **आध्यात्मिक** तथा **ऐतिहासिक विरासत** पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह **परमहंस योगानंद** की जन्मस्थली भी है।

## मुख्य बिंदु

## गोरखपुर की आध्यात्मिक और ऐतिहासिक विरासत:

- **नाथ परंपरा:**
    - **श्री आदिनाथ**, **मत्स्येन्द्रनाथ** तथा गुरु गोरखनाथ की शिक्षाओं पर आधारित नाथ परंपरा की उत्पत्ति गोरखपुर में हुई।
    - समय के साथ यह **आध्यात्मिक परंपरा** संपूर्ण भारत में फैली तथा विश्व के अनेक देशों तक पहुँची, जिससे विविध **योगिक** एवं **तप साधना पद्धतियों** पर व्यापक प्रभाव पड़ा।
- **भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:**
    - गोरखपुर का महत्त्व केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि उसका भारत के **स्वतंत्रता आंदोलनों** से भी गहरा संबंध रहा है।
    - **18वीं शताब्दी** में साधुओं के नेतृत्व में हुए विद्रोहों से लेकर 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तक, यह क्षेत्र निरंतर **प्रतिरोध का केंद्र** बना रहा।
    - **बाबू बंधू सिंह** तथा राम प्रसाद बिस्मिल जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान इस **पवित्र भूमि** से गहराई से जुड़ा है, जो इसके **साहस** तथा **देशभक्ति** की परंपरा को उजागर करता है।
- **गुरु गोरखनाथ के बारे में:**
    - गोरखनाथ, जिनका काल संभवतः **11वीं शताब्दी ईस्वी** के आसपास माना जाता है, एक **प्रख्यात हिंदू योगी** और **कानफटा योगियों** के आध्यात्मिक प्रवर्तक माने जाते हैं। यह संप्रदाय **हठ योग** का अभ्यास करने वाले तपस्वियों के रूप में प्रसिद्ध है।
    - **कनफटा योगी**, हठ योग के सिद्धांतों के अनुरूप **शारीरिक अनुशासन** तथा **आध्यात्मिक निपुणता** दोनों पर ज़ोर देते हैं। हठ योग, जो गोरखनाथ की शिक्षाओं से निकटता से जुड़ा है, एक ऐसी दार्शनिक एवं **आध्यात्मिक प्रणाली** है, जो **आध्यात्मिक पूर्णता** के मार्ग में **शरीर पर नियंत्रण** को माध्यम बनाती है।
    - यह विचारधारा **तप** को **गहन योगिक अनुशासन** के साथ संयोजित करती है, जो **कर्मकांडीय** अथवा **विशुद्ध भक्ति परंपराओं** से भिन्न मानी जाती है।

## परमहंस योगानंद के बारे में:

- **परिचय**
    - **परमहंस योगानंद** (1893–1952) पश्चिमी दुनिया में स्थायी निवास स्थापित करने वाले पहले **भारतीय योग गुरु** थे।
    - उन्होंने **20वीं सदी** के प्रारंभ में पश्चिमी समाज को भारतीय आध्यात्मिक दर्शन से परिचित कराने में **महत्त्वपूर्ण भूमिका** निभाई।
- **एक स्थायी आध्यात्मिक विरासत:**
    - हालाँकि उनकी प्रारंभिक उपस्थिति ने पश्चिम में गहरा **सांस्कृतिक प्रभाव** डाला, किंतु योगानंद की **स्थायी विरासत** उनके द्वारा प्रेरित **आध्यात्मिक जागृति** में निहित है।
    - उन्होंने वर्ष **1952** में अपने निधन तक सतत् रूप से **व्याख्यान देना**, **लेखन करना** तथा **क्रिया योग**, **ध्यान** और **सार्वभौमिक आध्यात्मिकता** के समन्वय को बढ़ावा देना जारी रखा।
    - वर्ष **1946** में प्रकाशित उनकी मौलिक कृति **'योगी की आत्मकथा'** ने पश्चिमी दुनिया में **आध्यात्मिक क्रांति** को जन्म दिया, जो आज भी प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

# आयुष चिकित्सा पद्धति

*आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।*

## आयुर्वेद

- **संहिता काल (1000 ईसा पूर्व):** परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
  - **चरक संहिता:** सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
  - **सुश्रुत संहिता:** आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है

भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

- **मुख्य शाखा:**
  - **आत्रेय पुनर्वसु-** चिकित्सकों की शाखा
  - **दिवोदास धन्वंतरि -** शल्यचिकित्सकों की शाखा

### आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।

- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।

## योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

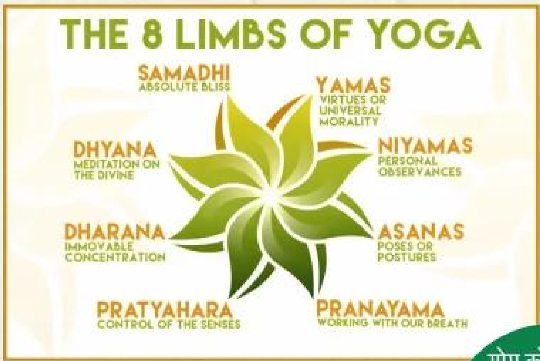


योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

- **प्राकृतिक चिकित्सा:** 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
  - शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
  - रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

## यूनानी

**ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)**

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
  - चार ह्यूमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

## सिद्ध

**10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्धर अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक**

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- **4 घटक:** लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्यूमर्स (मुक्कुट्रम) और 8 महत्त्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

**आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ**

## सोवा रिग्पा

**उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में**

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

## होम्योपैथी

**जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया**

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- **3 प्रमुख सिद्धांत:**
  - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("सम: समम् शमयति" या "समरूपता")
  - सिंगल मेडिसिन
  - मिनिमम डोज़

दृष्टि The Vision
Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/first-ayush-university